डॉ.पी.एस.पाटील
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु.मीनाक्षी शंकर भालदारे का "मन्नू भण्डारी के "आपका बंटी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

तिथि : 6/6/1990

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

डा.र.ग.देसाई
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय,
सांगली।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.मीनाक्षी शंकर भालदारे ने मेरे निर्देशन में "मन्नू भण्डारी के "आपका बंटी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध छात्राने मेरे सुझाओं का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघुशोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोधनिर्देशक
(डा. र.ग.देसाई)

सांगली।

तिथि : ८/८/१९९७।

प्रख्यापन

"मन्नू भण्डारी के "आपका बंटी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध प्रवन्ध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध छात्रा
(कु.मीनाक्षी शंकर भालदारे)

कोल्हापुर।

तिथि : ८ / ८/१९९७।

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य के इतिहास में उपन्यास विधा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। हिंदी उपन्यास के प्रारंभिक काल में उपन्यास में कल्पना की भरमार थी परन्तु आधुनिक काल में उपन्यास विधा में वास्तविकता तथा यथार्थ चित्रण मिलता है। उपन्यासकार समाज तथा सामाजिक समस्याओं को पाठक के सामने रखने का कार्य अपनी रचनाओं के द्वारा करता है। आज पाठक उपन्यास पढ़ते समय उसमें अपने जीवन की अनुभूति को ढूँढता है और समाज के यथार्थ का चित्रण खोजता है। मन्नू भण्डारीजी ने अपनी रचनाओं में बिल्कुल इसी का चित्रण किया है। मन्नू भण्डारीजी श्रेष्ठ कहानीकार, उपन्यासकार तथा नाटककार हैं। उन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा की चमक दिखाई है। उनके "आपका बंटी" उपन्यास का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

हिंदी साहित्य की एक छात्रा होने के नाते मुझे मन्नू भण्डारी के उपन्यास तथा कहानियाँ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने बी.ए.में "महाभोज" उपन्यास का अध्ययन किया है। "महाभोज" का अध्यापन करनेवाले मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ.टी.आर.पाटीलजी ने "आपका बंटी" की कहानी हमें अत्यंत सहज, मार्मिक ढंग से सुनाई थी। तभी से मेरे मन को इस बालमनोवैज्ञानिक, सामाजिक, समस्याप्रधान उपन्यास ने अत्यधिक प्रभावित किया। मैं एम.ए. उत्तीर्ण होने के पश्चात एम.फिल. के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय में आयी। एक दिन हमारे विभागाध्यक्षजी ने हमें सूचना दी कि आप लोगों को सिनॉप्सिस तैयार करनी है। तब झट से मेरे आँखों के सामने मन्नू भण्डारी का "आपका बंटी" उपन्यास आ गया। मैंने इस उपन्यास का विशेष अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया।

"आपका बंटी" उपन्यास के अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ प्रश्न खड़े हुए थे वे इस प्रकार हैं -

(१) मन्नू भण्डारी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?

(२) "आपका बंटी" का कथानक किस प्रकार का है ?

(३) उपन्यास के पात्रों के चरित्र-चित्रण में मन्नू भण्डारी कहाँ तक सफल हुई है ?

(४) उपन्यास के संवाद तथा भाषाशैली में लेखिका की प्रतिभा कहाँ तक दिखाई देती है ?

(५) पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करना कहाँ तक उचित है ?

(६) क्या आधुनिकता के नाम पर आज पति-पत्नी अपने दायित्व को भूल नहीं जा रहें ?

(७) आधुनिक नारी शिक्षित, स्वावलम्बी है फिर भी हमारे पुरूषप्रधान समाज में उसके लिए क्या स्थान है ?

(८) उपन्यास लिखने के पीछे लेखिका का उद्देश्य क्या है ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघुशोध प्रबन्ध में किया है और अन्त में उपसंहार के रूप में दे दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - मन्नू भण्डारी : व्यक्तित्व और कृतित्व।

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के जीवन का सामान्य परिचय आवश्यक होता है। अतः प्रस्तुत अध्याय में मन्नूजी के जन्म और उनके व्यक्तित्व के बाहय और आंतरिक पहलू का विवेचन किया है। इस अध्याय

को मैंने तीन विभागों में विभाजित किया है -

१.जीवन रेखा २.व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू ३.कृतित्व की पहचान।

मन्नूजी की जीवन रेखा के अन्तर्गत उनका जन्म तथा बचपन, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उन्हें प्रभावित करनेवाले लोग, उनका परिवार, उनका विवाह, उनका पारिवारिक जीवन, उन्हें मिला हुआ लेखन संस्कार, उनकी लोकप्रियता आदि का चित्रण किया है।

मन्नूजी के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के अन्तर्गत उनके जीवन के सभी अच्छे-बुरे पहलुओं का विवेचन है।

कृतित्व की पहचान के अन्तर्गत कहानीसंग्रह, उपन्यास, नाटक की सूची दी है। अन्त में निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय - "आपका बंटी" उपन्यास का तात्विक अध्ययन।

इस अध्याय के अन्तर्गत उपन्यास के तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा की है। वे तत्व निम्नांकित हैं -

(१) कथावस्तु :- कथावस्तु का परिचय देकर गुण और विशेषताएँ गिनाई हैं। साथ ही निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

(२) पात्र और चरित्र-चित्रण :- विभिन्न मानदण्डों के आधार पर पात्रों को विभाजित कर उनकी विशेताएँ दी हैं। चरित्र-चित्रण की प्रणालियों का विवेचन दिया है। अन्त में निष्कर्ष दिये हैं।

(३) संवाद और भाषाशैली :- संवादों के विविध प्रकारों का विवेचन करते हुए आलोच्य उपन्यास में उपलब्ध संवादों के प्रकारों को दिया है।

(४) देशकालवातावरण :- देशकालवातावरण की विशेषताएँ देते हुए लेखिका की सफलता-असफलता का विवेचन प्रस्तुत किया है। अन्त में निष्कर्ष

प्रस्तुत किया है।

(५) शीर्षक :- इसमें मानदण्डों के आधार पर शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करने का प्रयास किया है। साथ ही निष्कर्ष दिया है।

(६) उद्देश्य :- लेखिका के उद्देश्य को अभिव्यक्त करने की कोशिश इस भाग में की है। अन्त में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय - "आपका बंटी उपन्यास में नारी-जीवन का चित्रण।

तृतीय अध्याय के प्रथम भाग में वर्तमान भारतीय समाज में नारी के स्थान का चित्रण किया है। और दूसरे भाग में शकुन के चरित्र के बाहयपक्ष और आंतरिक पक्ष का चित्रण किया है। उनके अच्छे-बुरे सभी पहलुओंका विवेचन दिया है। इसके साथ-साथ अन्य स्त्री पात्रों का भी विवेचन संक्षेप में दिया है।

चतुर्थ अध्याय - "आपका बंटी" उपन्यास में बालक-जीवन का चित्रण।

इस अध्याय के अन्तर्गत बालममनोविज्ञान, बालविकास और उनके अध्ययन की उपयोगिता आदि का विवेचन करते हुए बंटी के चरित्र-चित्रण को स्पष्ट कर बालक जीवन चित्रण की विशेषताएँ दी है।

पंचम अध्याय - "आपका बंटी" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ ।

इस अध्याय के अन्तर्गत नारीजीवन की समस्या, सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, मानसिक समस्या का चित्रण संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

उपसंहार - सभी अध्यायां के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो उपन्यास के पूरे अध्ययन का सार है। अन्त में मैंने "सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची" दे दी है।

मेरी इस लघुशोध-प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

(१) सम्पूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

(२) चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष में परखने की कोशिश की है।

(३) मन्नू भण्डारी के "आपका बंटी" उपन्यास के आधार पर आधुनिक नारी जीवन से सम्बन्धित सभी समस्याओं का अनुशीलन किया है।

(४) बालक जीवन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया है।

(५) "आपका बंटी" के शिल्प पक्ष का समग्र अध्ययन किया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध कार्य के संकल्प की पूर्ति श्रद्धेय गुरूवर डॉ. र.ग.देसाई, अध्यक्ष हिंदी विभाग,श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय,सांगली के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है।

मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ.वसंत केशव मोरेजी, डॉ.पी.एस.पाटीलजी और डॉ.अर्जुन चौहानजी के मार्गदर्शन से ही यह कार्य संपन्न हुआ है। आपके गहरे अध्ययन का मैंने पूरा लाभ उठाया है। इन ऋणों के प्रतिदान में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरूवर के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं कर ही क्या सकती हूँ ? भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे संतोष होगा।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ.टी.आर. पाटीलजी, प्रा.मानेजी, प्रा.एन.आर.रानभरेजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

इस लघुशोध प्रबन्ध में मुझे प्रेरित करनेवाले सहायूयक कुलसचिव आर.जी. देसाईजी की मैं अत्यंत ऋणी हूँ।

अपने जीवन का हरकार्य मुझे मेरे माता-पिता के बिना अधूरा महसूस होता है। मेरा यह लघुशोध कार्य भी माता-पिता के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ है।

मेरे आप्तजनों में विशेषकर मेरी बड़ी बुआ शहाबाबाई खाड़ेजी और मेरे दोनें बड़े चाचाजी विठ्ठल भालदारेजी, वामन भालदारेजी और मेरे मामा दत्ता वाघमारे जी ने हर वक्त मुझे प्रोत्साहित किया मैं उनकी ऋणी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे सहृदयों एवं स्वजनों किरण पाटोळे, कलन्दर मुल्ला, मोहन सावंत, अरूण गंभिरे, भरत कुचेकर, राजेन्द्र पवार, अविराज शिन्दे, कु.सुनंदा नाईक, कु.विजयमाला पोळ, कु.कल्पना पाटील इन लोगों ने मेरी सहायता की है। उनकी मैं आभारी हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को संपन्न बनाने में निम्नलिखित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है -

ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

ग्रंथालय - श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय, सांगली ।

ग्रंथालय - शिक्षण महर्षि डॉ.बापूजी साळुंखे महाविद्यालय, मिरज।

इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारें और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध कार्य में किया है।

इस लघुशोध प्रबन्ध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्री मिलिंद भोसलेजी ने उत्तम और बड़ी तत्परता से कर दिया इस लिए मैं उनकी आभारी हूँ।

अन्त में उन सब का आभार मानकर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध छात्रा
(कु.मीनाक्षी शंकर भालदारे)

कोल्हापुर।

दिनांक / /१९९७